

Vol 4 Issue 5 Feb 2015

ISSN No : 2249-894X

*Monthly Multidisciplinary
Research Journal*

*Review Of
Research Journal*

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2249-894X

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Mabel Miao Center for China and Globalization, China
Kamani Perera Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka	Xiaohua Yang University of San Francisco, San Francisco	Ruth Wolf University Walla, Israel
Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Karina Xavier Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA	Jie Hao University of Sydney, Australia
Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	May Hongmei Gao Kennesaw State University, USA	Pei-Shan Kao Andrea University of Essex, United Kingdom
Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania	Marc Fetscherin Rollins College, USA	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Liu Chen Beijing Foreign Studies University, China	Ilie Pinte Spiru Haret University, Romania
Mahdi Moharrampour Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran	Nimita Khanna Director, Isara Institute of Management, New Delhi	Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai
Titus Pop PhD, Partium Christian University, Oradea, Romania	Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur	Sonal Singh Vikram University, Ujjain
J. K. VIJAYAKUMAR King Abdullah University of Science & Technology, Saudi Arabia.	P. Malyadri Government Degree College, Tandur, A.P.	Jayashree Patil-Dake MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC), Kachiguda, Hyderabad
George - Calin SERITAN Postdoctoral Researcher Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi	S. D. Sindkhedkar PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]	Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary Director, Hyderabad AP India.
REZA KAFIPOUR Shiraz University of Medical Sciences Shiraz, Iran	Anurag Misra DBS College, Kanpur	AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI, TN
Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur	C. D. Balaji Panimalar Engineering College, Chennai	V.MAHALAKSHMI Dean, Panimalar Engineering College
	Bhavana vivek patole PhD, Elphinstone college mumbai-32	S.KANNAN Ph.D , Annamalai University
	Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary, Play India Play (Trust), Meerut (U.P.)	Kanwar Dinesh Singh Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org



'जनसंख्या समस्या के स्त्री पाठ के रास्ते'

रेणु विहान

शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राज.)

सारांश :-जनसंख्या आधिक्य की विकराल समस्या को लेखक द्वारा एक नई दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, जिसे स्त्री-दृष्टिकोण की संज्ञा से नवाजा गया है। जनसंख्या विस्फोट के पीछे स्त्री के अबलाकरण, अशिक्षित और साधनहीनता की उस ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक प्रक्रिया को पाया, जो उससे उसकी 'देह' छीनकर प्रजनन की घरेलू-बीमार मशीन (या कारखाना) बनने को अभिशप्त कर देती है। इन सबके मूल में समाज में सदियों से चली आ रही पितृसत्तात्मकता है। जनसंख्या विमर्श का यह नया दृष्टिकोण, जो मनोवैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक है, पितृसत्ता के चरित्र का पर्दाफाश भी करता नजर आता है। जो स्त्री (पितृसत्ता) की बहुविध वंचनाओं-गुलमिर्गा व पीड़ा का मूल है।

प्रस्तावना :-

लेखक ने विवाह संस्था और वेश्यावृत्ति को पितृसत्तात्मक समाज के दो शोषणवादी यन्त्र कहे हैं, जिनके द्वारा उसे (स्त्री) 'व्यक्ति' से 'देह' में तब्दील कर देते हैं। जिससे उसके यौन-शोषण के रास्ते प्रजनन (सन्तानोत्पत्ति) की बाध्यता उत्पन्न होती है। जिसका खामियाजा स्त्री अपने आत्म सम्मान, इच्छा, स्वतन्त्रता, कैरियर आदि को दाव पर लगाकर ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और अस्तित्व को गंवाकर भुगतती है। स्त्री माँ बनती नहीं बनाई जाती है, क्योंकि मातृत्व क्षमता और माँ बनने की इच्छा में फर्क है। स्वतन्त्रता के समय से ही जनसंख्या का विश्लेषण जनसंख्या अनुपात में उत्पादन-विकास-खपत श्रमशक्ति आदि की उपलब्धि-अनुपलब्धि के संदर्भ में किया जा रहा है, परन्तु इस कृति में उपरोक्त विमर्श से विपरीत पितृपक्षीय सीमाओं का भलीभाँति रेखांकन किया गया है जिसमें संस्कृति, समाज-गणन तथा वर्तमान विकास प्रक्रिया से जुड़े कई पुराने-नए मिथक ध्वस्त होते हैं। विवाह संस्था, वेश्यावृत्ति परम्परागत रूढ़िवादिता या स्त्री स्वास्थ्य के लिए आधुनिक विज्ञान द्वारा खोजे गए उपाय सभी वस्तुतः उसे देह यन्त्रणा या पीड़ा में धकेलने की साजिश का हिस्सा है। जिसका स्पष्टीकरण लेखक द्वारा आँकड़ों के माध्यम से किया गया है। जनसंख्या-समस्या और स्त्री सशक्तिकरण में परस्पर व्युत्क्रमानुपाती सम्बन्ध है। यह समस्या पितृसत्ता की देन है और इसका समुचित और सम्पूर्ण निवारण का अर्थ है पितृ सत्ता का अवसान। यह तृतीय अध्याय में वर्णित है।

चतुर्थ अध्याय में पितृ सत्ता के प्रति आक्रोश से व्यक्त किया गया है क्योंकि पितृसत्तात्मक समाज-रचना ने सांस्कृतिक मूल्य, पितृ स्थानीय विवाह व्यवस्था व मर्द-केन्द्रित अर्थव्यवस्था ने बेटियों का अवमूल्यन करते-करते उन्हें 'पराया धन' मात्र बना दिया है। पितृ सत्ता का इससे अधिक घिनौना चेहरा क्या हो कि मानव जाति कल्याण के उद्देश्य से प्रारम्भ की गई, सोनोग्राफी, एम्नियोसैंटिक अल्ट्रासाउंड, ट्रांस वेजिनल अल्ट्रासाउंड, कोरियोनिक बिल्लस सैम्पलिंग जैसे आधुनिक तकनीकों द्वारा कन्या (स्त्री) प्रजाति को ही लुप्त (कन्या भ्रूण हत्या द्वारा) किया जा रहा है। अब तो माइक्रोसाट तकनीकी भी शुरू हो गई है जिसके अनुसार शर्तिया बेटा ही होगा। इस मानसिकता की पुष्टि करने के लिए लेखक द्वारा उदाहरण दिया जाता है कि सितम्बर १९९९ में राजस्थान के देवरा गॉव (बाडमेर) में ११० सालों में पहली बार कोई बारात आई। इन सबको रोकने में कानून भी असफल ही सिद्ध हुए हैं।

साहिर लुधियानवी की पंक्तियों द्वारा पंचम अध्याय में महिलाओं की दुर्दशा को उजागर करते हुए लेखक पितृ सत्ता और समाज की सदिया से चली आ रही परम्पराओं, मान्यताओं रूढ़ियों के द्वारा स्त्री जीवन के विनाश और विध्वंस की तस्वीर प्रस्तुत करता है। पुरुष निर्भरता और पुरुष द्वारा शापित होने की विचारधारा द्वारा स्त्रियों की स्थिति और भी बदतर होती गई जिसके (परिणाम स्वरूप) प्रतिफल में दोयम दर्जे की प्राणी (Second Sex) की आइडियालॉली विकसित हुई। यही वजह है कि वह उपेक्षित होने के कारण चाहे-अनचाहे गर्भ का भार ढोने के लिए विवश है। जनवृद्धि में बाल

विवाह को भी आपेक्षित कारण माना गया है। वैधव्य जीवन की जटिलताओं को बड़ी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। विवाह संस्था को स्त्री को ज्ञान-वंचित और सक्रिय समाज से दूर करने वाली प्रक्रिया के तौर पर रखा गया है। इस विचार का समर्थन आँकड़ों द्वारा किया गया है।

छठे अध्याय में जनसंख्या विमर्श की मूलभूत कमियों को सार रूप में सारगर्भित किया गया है। सरकारी और गैर सरकारी बुद्धिजीवी वर्ग में जनाधिक्य का जो विचार विमर्श चलते आया है, उसमें स्त्री पक्ष को पूरी तरह नजर अंदाज किया गया है। अर्थव्यवस्था और समाज के सुंतुलन को ही मुख्य पक्ष के रूप में रखा जाता है। स्त्री पक्ष के अभाव में अब तक चली आ रही बहस अधूरी और अवैज्ञानिक ही है। अर्थात् जनसंख्या के परिसीमन अथवा नियोजन का लक्ष्य तभी पूर्ण होगा जब पितृ सत्ता का बुनयादी अन्त होगा और स्त्री ‘देह’ व ‘मन’ पुरुष सत्ता द्वारा मुक्त कर दिया जायेगा। इस तरह के विचार-विमर्श से सन्तुलन उत्पन्न हो पायेगा।

अंतिम अध्याय में लेखक द्वारा अपनी कृति में जनसंख्या समस्या को निमन्त्रित करने सम्बन्धित सुझावों को प्रस्तुत किया है। स्त्री केन्द्रित लोकतान्त्रिक वैज्ञानिक समाज की अवधारणा का प्रतिपादन किया है। साथ ही पूर्व अध्यायों का सार प्रस्तुत किया गया है, जिससे सभी अध्यायों की समीक्षा के बाद पाया गया कि पुस्तक में वर्णित सभी उपायों को अपनाया जाता है तो व्यक्तिगत पितृत्व की अवधारणा निर्धक हो जायेगी और व्यक्तिगत मातृत्व मजबूती से छा जायेगा। नारी की वृहत्तर भूमिका होगी, सामान्य कुशलक्षेम के स्तर में वृद्धि होगी। सही अर्थों में यही नारी सशक्तिकरण और नारी मुक्ति भी होगी।

जनसंख्या विमर्श के स्त्री दृष्टि का पर्यवेक्षण करते-करते लेखक हो यह डर है कि इस पर ‘छिद्रान्वेषण’ की आपत्ति हो सकती है। जिसके लिए वह नम्र निवेदन भी करता है कि यह पुस्तक इस ढंग से स्त्री के प्रति संवेदनशील है कि पुरुष पाठक को विचारोत्तेजित कर सकती है। पुस्तक में शुद्ध साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया गया है, जिसको कुछ और सरल बनाया जा सकता था। पुस्तक में ऐतिहासिक, दार्शनिक, विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक पद्धति का प्रयोग, मौलिक लेखों एवं सहायक ग्रन्थों पत्र-पत्रिकाओं के आधार पर किया गया है। इसके अतिरिक्त सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में सभी पुस्तकों का पूर्ण विवरण दिया गया है।



रेणु विहान

राजनीति विज्ञान विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, राजस्थान।

Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Books Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- * Directory Of Research Journal Indexing
- * International Scientific Journal Consortium Scientific
- * OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org